शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
Vol. 9, Issue 4, pp (121-126), Month: Dec. 2018

आर्थिक विकास में महिला उद्यमियों की भूमिका

डॉ0 निधि भटनागर
प्रवक्ता वाणिज्य विभाग (स्व0वि0पो0)
जी0एस0एच0 (पी0जी0) कालेज,
चान्दपुर, बिजनौर, उ0प0, भारत ।
Email: naseemahmad83@yahoo.co.in

सारांश

वर्तमान समय में शिक्षा के विकास के साथ–साथ महिला सशक्तिकरण को बल मिला है और वे उद्यम के क्षेत्र में अपना स्थान बनाती जा रही हैं। सरकार द्वारा भी महिला सशक्तिकरण हेतु अनेक प्रयास किये जा रहे हैं। जिसके कारण देश के आर्थिक विकास में महिला उद्यमियों की भूमिका में वृद्धि हुई है। महिला सशक्तिकरण हेतु एवं महिला उद्यमियों की आर्थिक विकास में भूमिका को लेकर राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर विभिन्न संगोष्ठियों/सेमीनारों, वाद–विवाद प्रतियोगिता इत्यादि का आयोजन किया जाता रहा है जिनमें इसके सकारात्मक एवं नकारात्मक परिणाम उदित हुये हैं। भारत एक विकासशील राष्ट्र है। अतः इसके तीव्र विकास हेतु देश की लगभग 50 प्रतिशत महिला जनसंख्या का सकारात्मक सहयोग आवश्यक है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर प्रस्तुत शोध लेख प्रस्तुत किया जा रहा है। जिसमें देश के आर्थिक विकास में महिला उद्यमियों की भूमिका पर प्राथमिक समंकों के आधार पर प्रकाश डाला गया है।

मुख्य शब्द *–महिला उद्यमिता, आर्थिक विकास*

प्रस्तावना

विकासशील समाजों में उद्योगों तथा उद्यमियों की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण होती है। उद्योगों के स्वरूप पर, उद्यमी की सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि तथा मनोवृत्तियों का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। मिश्रित तथा पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में उद्यमिता को सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य के रूप में स्वीकार किया गया है प्राचीन काल में महिलाओं का कार्यक्षेत्र केवल घर तक ही सीमित था लेकिन आज महिलायें भी पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर निरन्तर कार्य कर रही हैं। अपनी रूचि तथा बौद्धिक योग्यता के आधार पर विभिन्न जातियों की महिला उद्यमी अनेक प्रकार के व्यवसायों का चुनाव कर परिवार की आर्थिक जिम्मेदारियों का निर्वाह करने में पुरुष की बराबर सहभागी है।

विगत दो–तीन दशकों में भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक संरचना में महिलाओं की प्रस्थिति में महत्वपूर्ण परिवर्तन आये हैं। वर्तमान में केवल आर्थिक रूप से कमजोर और विवश महिला ही उद्यमी के रूप में विकसित नहीं हो रही है, अपितु वे महिलायें भी उद्योग स्थापित करती दिखायी दे रही है जो एक ओर तो उपयोगी सामाजिक जीवन व्यतीत करना चाहती है तथा

अपनी योग्यता और ज्ञान का उपयोग करना चाहती है वहीं दूसरी ओर पारिवारिक आय में वृद्धि भी उनके लिए महत्वपूर्ण प्रेरक है।

प्रस्तुत लेखपूर्ण रूप से आनुभाविक अध्ययन है जो उ0प्र0 प्रान्त के बरेली मण्डल की महिला उद्यमियों की आर्थिक विकास में उनकी भूमिका पर केन्द्रित है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध लेख का प्रमुख उद्देश्य महिला उद्यमियों के आर्थिक जीवन एवं उनकी उद्यमिता के आधार पर देश के आर्थिक विकास में उनकी भूमिका का अध्ययन करना है।

पूर्व अध्ययनों का पुनरावलोकन

कला रानी के अध्ययन विभिन्न अवस्थाओं में महत्वपूर्ण है। कैसे कार्य करने वाली महिलायें घर एवं बाहर की जिम्मेदारियों को निभाती है और कैसे दोनों अवस्थाओं के कारण द्वन्द्व उत्पन्न होता है, अधिकतर महिलायें अपनी पुरानी व्यवस्था पर जोर देती है। इनका मत है कि आवश्यकता पूर्ति हेतु जो स्त्री कार्योजन में आती है वह अधिक द्वन्द्वग्रस्त होती है। ये अपने बच्चों, घर परिवार के बारे में अधिक चिंतित रहती है। इसी प्रकार नीरा देसाई के अनुसार, पुरुषों के साथ–साथ यह महसूस करने लगी है, कि नारी के जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य केवल पति के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहने, बच्चों को जन्म देने तथा गृहस्थी सम्भालने तक ही सीमित नहीं है, अपितु नारी जीवन का उद्देश्य इससे भी अधिक ऊँचा है। शिक्षित कामकाजी महिलाओं की संख्या में लगातार बढ़ोतरी इस बात का परिचायक है कि वे आर्थिक रूप से प्रेरित होकर ही उद्यमों से जुड़ रही है।

राजगोपाल वर्मा के अनुसार, महिलायें धीरे–धीरे यह महसूस करने लगी है कि इंसान के रूप में उनका भी एक निजी व्यक्तित्व है तथा उनके जीवन का लक्ष्य मात्र अच्छी पत्नियां और समझदार माँ बन जाने से पूरा नहीं हो जाता है वरन् वे यह भी मानने लगी है कि वे अब भी नागरिक समुदाय एवं संगठित समाज की सदस्यायें हैं।

इसी प्रकार प्रो0 दुबे ने अपने अध्ययनों में स्पष्ट किया है कि समकालिक भारतीय समाज में महिला की प्रस्थिति, भूमिकायें और प्रचलित परम्परागत मान्यताएं धीरे–धीरे बदल रही है जिसके लिए आधुनिक शिक्षा तथा व्यवसायिक गतिशीलता एवं आर्थिक रूचि में परिवर्तन विशेष रूप से उत्तरदायी है।

शोध विधि

प्रस्तुत लेख पूर्ण रूप से प्राथमिक तथ्यों पर आधारित एक आनुभाविक अध्ययन है। शोध हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली एवं निदर्श के अंतर्गत बरेली मंडल की प्रत्येक जनपद से 50–50 अर्थात् 200 महिला उद्यमियों का चयन सुविधानुसार विधि से किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण

शोध पत्र में महिला उद्यमियों द्वारा प्राप्त तथ्यों को एकत्रित करके सारणी के रूप में विश्लेषण निम्नवत् है–

(1) वित्तीय सुविधाओं का विदोहन

1.1 व्यवसाय के लिए ऋण –

ऋण सम्बन्धी जानकारी	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
हाँ	64	32.00
नहीं	136	68.00
योग	200	100.00

तलिका का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि केवल 32 प्रतिशत महिला उद्यमियों ने अपना व्यवसाय प्रारम्भ करने के लिए ऋण लिया है शेष 68 प्रतिशत महिला उद्यमियों ने अपनी पारिवारिक धनराशि से व्यवसाय प्रारम्भ किया।

1.1 ऋण लेने के स्रोत –

ऋण लेने के स्रोत	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
बैंक	49	76.56
बीमा कम्पनी	–	–
साहूकार	–	–
मित्र	02	03.13
सम्बन्धी	13	20.31
योग	64	100.00

उपरोक्त आंकड़ों से स्पष्ट है कि 76.56 प्रतिशत महिला उद्यमियों ने अपने व्यवसाय के लिए ऋण बैंक से लिया है। केवल 3.13 प्रतिशत महिला उद्यमियों ने अपने मित्र सम्बन्धी से ऋण लिया है क्योंकि व्यवसाय छोटा होने के कारण उन्हें अधिक धन की आवश्यकता नहीं थी।

(2) व्यवसाय द्वारा सेवा उपलब्धता

कार्य करने की अवधि –

कार्य करने की अवधि (घण्टों में)	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
प्रातः से मध्याह्न (4)	15	07.5
प्रातः से मध्याह्न (8)	54	27.0
प्रातः से रात्रि (12)	104	52.0
मध्याह्न से अपराह्न (4)	26	13.0
अपराह्न से रात्रि तक (6)	01	0.5
योग	200	100

उपरोक्त आंकड़ें दर्षाते है कि 52 प्रतिशत महिला उद्यमियों ने बताया कि वे आवश्यकता पड़ने पर प्रातः से रात्रि (12 घण्टे) तक कार्य करती है। 27 प्रतिशत महिला उद्यमी लगभग 8 घण्टे, 7.5 प्रतिशत व 13 प्रतिशत महिला उद्यमी लगभग 4 घण्टे तक शेष 0.5 प्रतिशत लगभग 6 घण्टे

तक कार्य करती है।

(3) रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना

श्रमिकों का स्वरूप –

श्रमिकों का स्वरूप	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
प्रशिक्षित	26	30.59
अप्रशिक्षित	11	12.94
दोनों	48	56.47
योग	85	100.00

उपरोक्त तालिका के आधार पर 30.59 प्रतिशत महिला उद्यमियों ने अपने यहाँ प्रशिक्षित श्रमिकों तथा 12.94 प्रतिशत ने अप्रशिक्षित श्रमिकों को रखा है जबकि 56.47 प्रतिशत महिला उद्यमियों ने दोनों ही प्रकार के श्रमिकों को रखा है।

(4) लाभ का नियोजन

व्यवसाय से प्राप्त राषि को खर्च करने की स्वतन्त्रता –

स्वेच्छा से खर्च करने की स्वतंत्रता	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
हाँ	191	95.5
नहीं	9	4.5

उक्त तालिका से स्पश्ट है कि अधिकांश 95.5 प्रतिशत महिला उद्यमी अपने व्यवसाय से प्राप्त राशि को स्वेच्छा से खर्च करती हैं। केवल 4.5 प्रतिशत महिला उद्यमी ऐसा नहीं कर पाती हैं।

(5) लाभ–राशि को किन मदो/कार्यों पर खर्च करती हैं

कार्य	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
व्यवसाय में	37	18.5
परिवार पर	150	75.0
स्वयं पर	12	6.0
अन्य पर	1	0.5
योग	200	100.00

तलिका से स्पष्ट है कि 18.5 प्रतिशत महिला उद्यमी लाभ राषि अपने व्यवसाय में ही लगा देती है जबकि 75 प्रतिशत महिला उद्यमी अपने परिवार पर खर्च कर देती है। 6 प्रतिशत महिला उद्यमी स्वयं पर तथा 0.5 प्रतिशत अन्य पर खर्च कर देती है।

(6) उद्यमशीलता एवं पारिवारिक उत्तरदायित्व

पारिवारिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
अधिक आसानी से	55	27.5

आसानी से	65	32.5
बिना किसी कठिनाई के	8	4.0
कुछ कठिनाई से	69	34.5
बिल्कुल नहीं	3	1.5
योग	200	100.00

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 27.5 प्रतिशत महिला उद्यमियों ने कहा कि वे अधिक आसानी से अपने पारिवारिक दायित्वों को पूरा कर लेती है और 32.5 प्रतिशत महिला उद्यमी 27.5 प्रतिशत की अपेक्षा कुछ कम आसानी से अपने दायित्व निभाती है। 34.5 प्रतिशत महिला उद्यमियों को अपने पारिवारिक दायित्वों को कुछ कठिनाई से निभाती है जबकि 4 प्रतिशत बिना कठिनाई से निभा लेती है। 1.5 प्रतिशत महिला उद्यमी बिल्कुल नहीं निभा पाती है।

महिला उद्यमियों की समस्याएं

महिला उद्यमियों को भारतीय समाज के कड़े मूल्यों के कारण व्यापार स्वामित्व में प्रवेश करने और प्रबंधन करने के लिए आने वाली प्रमुख समस्याएं निम्न हैं–

वित्त की समस्या

अधिकांश महिला उद्यमियों को अपने व्यापार की शुरुआत अवधि के दौरान स्वयं उत्पन्न वित्त पर एक महत्वपूर्ण हद तक निर्भर रहना पड़ता है। कुछ निवेशक महिलाओं द्वारा संचालित व्यवसायों में निवेश करने में संकोच करते हैं कि महिलाएं व्यवसाय और परिवार के मामलों में पुरुषों से अधिक सक्षम नहीं है।

टेक्नोलॉजी की कमी

प्रौद्योगिकी तक पहुँच और बौद्धिक सम्पदा सुरक्षा के साथ समस्याओं को महिला उद्यमियों के लिए समस्या माना जाता है क्योंकि वर्तमान समय में कम्प्यूटर ज्ञान की कमी एक बड़ी समस्या है परन्तु महिला उद्यमियों में कम्प्यूटर ज्ञान की कमी एक बड़ी समस्या है।

विश्वास की कमी

चूंकि महिलाएं अधीनस्थ स्थिति स्वीकार कर रही है। नतीजतन उन्हें अपनी क्षमताओं का विश्वास नहीं है, यहाँ तक कि घर पर भी, परिवार के सदस्यों को निर्णय लेने की क्षमताओं वाली महिलाओं में ज्यादा विश्वास नहीं होता है।

सीमित गतिशीलता

अपने परिवार की ओर प्राथमिक घरेलू जिम्मेदारियों के कारण, उनका समय दो दुनिया के बीच बाँटा गया हैं महिला उद्यमियों ने काम के लिए समय सीमित कर दिया है जिसके कारण वह अपने उद्यम के लिए यात्राएं करने में सक्षम नहीं है।

पुरुष प्रधान समाज

एक महिला उद्यमी के परिवार के साथ–साथ व्यवसाय में पुरुषों का प्रभुत्व है। अक्सर उन्हें लगभग हर कार्य के लिए पुरुषों से अनुमति प्राप्त करनी होती है। उन्हें समाज में आज भी

बराबरी का स्थान प्राप्त नहीं है।

सुझाव–

1. सरकार द्वारा वित्त उपलब्ध कराने के लिए विषेश योजनाएं लागू की जानी चाहिए जिससे महिला उद्यमी सभ्य परिस्थिति में बैंक ऋण प्राप्त कर सकें।

2. महिला उद्यमियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अधिक बाल देखभाल सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिए।

3. बेल्जियम सरकार द्वारा लागू ''चेक सेवाओं'' जैसी पहलो की प्रतिलिपि बनाई जानी चाहिए। यह प्रणाली महिला उद्यमियों के काम के भार को कम करेगी। साथ ही बेरोजगारों की संख्या में कमी आयेगी।

4. उद्यमशीलता के स्तर को बढ़ाने के साथ–साथ टेक्नोलॉजी का अधिक से अधिक उपयोग करने को प्रोत्साहित किया जाये।

निष्कर्ष

शोध लेख के निष्कर्ष के आधार पर कह सकते हैं कि महिला उद्यमी आर्थिक विकास के साथ स्वयं और अन्यों के लिए रोजगार का सृजन तो करती है। साथ में देश के आर्थिक विकास और राष्ट्रीय आय में अपनी अहम भूमिका निभाती है। यह सत्य है कि महिला उद्यमी को भारतीय उद्योग जगत में बहुत अधिक प्रतिनिधित्व नहीं मिलता है। लेकिन वर्तमान समय में सरकार की ओर से चलाये जा रहे विकास कार्यक्रमों से महिला उद्यमियों की स्थिति में सुधार आया है और भविष्य में महिला अपनी प्रबन्धन क्षमता और संगठन के माध्यम से देश के चहुमुंखी विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहेगा।